संज्वलन मोह

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मोहनीय कर्म सेनापति है। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्म घाती कर्म है। प्रत्येक जन्म में यह अपडेट होता रहता है। पिछले जन्म के घाती कर्म इस जन्म में अपडेट हो जाते हैं और इस जन्म के घाती कर्म भविष्य जन्म में अपडेट होते हैं। घाती कर्म आत्मा के गुणों का घात करते हैं। जीव की अपनी शारीरिक, मानसिक एवं वाचिक शुभाशुभ क्रिया द्वारा या मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग इन कारणों से प्रेरित होकर रागद्वेषात्मक प्रवृत्ति से चुम्बक की तरह आकृष्ट आत्मा, जो करता है, वह कर्म कहलाता है। आत्मा और कर्म का सम्बन्ध क्रिया के द्वारा होता है। जब कर्म आत्मा के साथ बधते हैं तो उनका फल भी भुगतना पड़ता है। इसीलिए कहा गया है कि अपना किया हुआ कर्म अपने को भुगतना पड़ता है। कर्म दो प्रकार का माना गया है—भावकर्म और द्रव्यकर्म। रागद्वेषात्मक परिणाम अर्थात् कषाय भाव कर्म है, कार्मण जाति का पुद्गल—जड़तत्त्व विशेष, जो कषाय के कारण आत्मा के साथ मिल जाता है द्रव्यकर्म कहलाता है। जीव और कर्म का सम्बन्ध अनादि है।

जैनागमों में आठ कर्मों का उल्लेख मिलता है जिनसे बंधा हुआ जीव संसार में परिवर्तन करता है— ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय। ये आठ कर्म हैं। इन आठ कर्म प्रकृतियों को भी दो भागों में बांटा गया है— घातिकर्म और अघातिकर्म। जो कर्म पुद्गल आत्मा से चिपककर आत्मा के मुख्य या स्वाभाविक गुणों का घात करते हैं, उनको घातिकर्म कहते हैं। उन कर्मों का मूलोच्छेदन होने से ही आत्मा सर्वज्ञ या सर्वदर्शी बन सकता है। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय ये चार कर्म घातिकर्म कहलाते हैं। जो कर्म आत्मा के मुख्य या स्वाभाविक गुणों का घात नहीं कर पाते वे अघातिकर्म कहलाते हैं।

वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र ये चार अघातिकर्म हैं। जैन दर्शन के अनुसार जब कोई कर्म किया जाता है तो उस कर्म के परमाणु आठ भागों में विभक्त हो जाते है, और आत्मा के

स्वाभाविक गुणों को प्रगट नहीं होने देते। आत्मा अनन्तज्ञान सम्पन्न है। संसार में जितनी आत्माएं है, उन सबमें अनन्तज्ञान विद्यमान है। परन्तु ज्ञानावरणीयकर्म आत्मा के इस अनन्तज्ञान को आच्छादित कर देता है। ज्ञानावरणीय कर्म आंख की पट्टी के समान है। जिस प्रकार आंख के आगे पट्टी बांधने से देखने में रुकावट होती है, वैसे ही ज्ञानावरणीय कर्म आत्मा की ज्ञानशक्ति का निरोध करता है। जो कर्म आत्मा की साक्षात्कार करने की शक्ति के आवरण करने में निमित्त हैं वे दर्शनावरणीय कर्म हैं। दर्शनावरणीय कर्म प्रतिहारी के समान है। जैसे प्रतिहारी राजा के दर्शन में रुकावट डालता है, वैसे ही दर्शनावरणीय कर्म आत्मा की दर्शन शक्ति को आच्छादित कर देता है। जिन कर्मों के प्रभाव से आत्मा निजानन्द को भूलकर सांसारिक सुख–दुःख रूप फलों का अनुभव करता है उसे वेदनीय कर्म कहते हैं। जिस प्रकार मधु से लिप्त तलवार की धार को चाटने से स्वाद मालुम पड़ता है, उसके समान सातवेदनीय है और जीभ कट जाती है, उसके समान असातवेदनीय है। जो आत्मा के मोहभाव के होने में अर्थात् राग, द्वेष और मिथ्यात्व भाव के होने में निमित्त है वह मोहनीय कर्म है। मोहनीय कर्म मद्यपान करने के समान है। जिस प्रकार मद्यपान करने वाले को सुध–बुध नहीं रहती, वैसे ही मोहनीय कर्म के उदय से जीवों की तत्त्व श्रद्धा विपरीत होती है और विषयभोगों में आसक्ति रहती है।

आयुष्य कर्म के द्वारा आत्मा चारों गतियों में–नैरयिक, तिर्यक्, मनुष्य और देव में भ्रमण करता रहता है। आयुष्यकर्म बेड़ी के समान है। जिस प्रकार काठ की बेड़ी में पड़ा हुआ मनुष्य उसको तोड़े बिना निकल नहीं सकता, वैसे ही आयुष्यकर्म को भोगे बिना जीव एक भव से दूसरे भव में नहीं जा सकता। नामकर्म के प्रभाव से जीव शुभ या अशुभ शरीर की रचना, प्रभाव आदि प्राप्त करता है, उसे नामकर्म कहते हैं। गोत्रकर्म के द्वारा जाति, कुल आदि की उच्चता, निम्नता होती है, उसे गोत्र कर्म कहते हैं।ये क्रमशः उच्चता–निम्नता, सम्मान और असम्मान के निमित्त बनते हैं। अन्तरायकर्म के कारण आत्मा की दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य की शक्ति में विघ्न–बाधाएं या रुकावटें आएं, पदार्थ पास में होते हुए भी उनका भोगोपभोग न हो सके, उसका नाम अन्तराय कर्म है।

जो कषाय परिषह तथा उपसर्ग के आ जाने पर साधुओं को भी कुछ–कुछ जलाने लगता है अर्थात् उन पर भी अपना प्रभाव डाल देता है उसे संज्वलन कषाय या मोह कहते हैं। यह साधुत्व में बाधा नहीं डालता किन्तु यथाख्यात चारित्र को नहीं आने देता। पानी में खींची हुई लकीर जैसे खींचने के समय ही मिट जाती है उसी प्रकार किसी विशेष कारण से आया हुआ क्रोध तत्काल शान्त हो जाता है, उसे संज्वलन क्रोध कहते हैं। लता या तिनकों का खम्भा बिना परिश्रम किये सहज में झुक जाता है उसी प्रकार जो मान सहज ही छूट जाता है वह संज्वलन मान है। छीले हुए बांस के टुकड़ों का टेढ़ापन जैसे विशेष प्रयत्न किये बिना ही मिट जाता है वैसे ही माया अपने आप ही दूर हो जाती है, वह संज्वलन माया है। जैसे वस्त्र पर लगा हुआ हल्दी का रंग सहज में ही धूल जाता है उसी प्रकार जो लोग विशेष प्रयत्न किये बिना अपने आप दूर हो जाता है उसे संज्वलन लोभ कहते हैं।